

वताओं के पास गए, लेकिन अंततः उन्हें राजा अम्बरीष की सारण में ही माना पड़ा। अम्बरीष ने उनका सम्मान किया और क्षमा भाव रखते हुए कहा कि जो हो गया, सो हो गया। यह प्रसंग हमें क्षमा, भक्ति और विनम्रता का संदेश देता है।

स्वामी जी ने राजा सप्तर्ष के पुत्रों के उद्धार के लिए मांगे के पृथ्वी पर अवतरण की कथा भी सुनाई। उन्होंने गवान श्रीराम के चरित्र का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान श्रीराम गवान विष्णु के अवतार हैं।